

Periodic Research

युवाओं में बढ़ता नशा : एक घातक चुनौती

सारांश

मादक पदार्थों का चलन आज संपूर्ण देश के लिए एक सामाजिक समस्या है, जो छूट की बीमारी की तरह समाज में फैल रही है और युवा वर्ग को धीरे धीरे ध्वस्त कर रही है। अपरिपक्व उम्र के युवाओं में हमेशा कुछ नया ज्ञान प्राप्त करने की उत्कृष्ट होती है, जिसके फलस्वरूप यदि उन्हें कोई मादक पदार्थ मिल जाता है तो वे उसके दुष्परिणाम जानते हुए भी स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाते और उस पदार्थ के प्रति अपनी उत्सुकता दूर करने के लिए एक बार चखने की गलती कर बैठते हैं, फिर बार बार इसकी पुनरावृत्ति करते हैं। वर्तमान परिवेश में शिक्षण संस्थाएँ कमज़ोर नियमों के कारण नशाखोरी एवं असामाजिक क्रियाकलापों के अड़डे बनते जा रहे हैं, जहाँ विद्या अध्ययन का उद्देश्य लेकर आने वाले भोले भाले विद्यार्थी बुरी संगत एवं दिखावे के साथ साथ सामाजिक दबाव का शिकार बन कर नशा संस्कृति से जुऱ्ज जाते हैं। फलतः वैयक्तिक विघटन से प्रारंभ हुई प्रक्रिया पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विघटन के अप्रिय दृष्टांत भी प्रस्तुत करती हैं।

मुख्य शब्द : असामाजिक क्रिया—कलाप, वैयक्तिक विघटन, मद्यपान

प्रस्तावना

प्राचीनकाल में मद्यपान व नशीली दवाओं का इस्तेमाल राजाओं और उच्च वर्गीय संग्रांत परिवारों में हुआ करता था। आधुनिक समय में यह फैशन व स्वागत सत्कार का साधन बन गया है। सभी राष्ट्रों की सरकारें इसे आय के स्रोत के रूप में स्वीकार कर रही हैं। सामाजिक दृष्टि से यह एक विकट समस्या है। शराब या नशीली दवायें व्यक्ति विशेष के लिये हानिकारक तो ही हैं, इससे परिवार एवं समाज भी विघटित होता है। आज नशीले पदार्थों की काली छाया समृद्ध परिवार और उच्च वर्ग तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि इसकी विषाद छाया में झुग्गी-झोंपड़ी, रिक्शा-टैक्सी चालक बेरोजगार युवा स्कूल—कालेज के विद्यार्थी आदि सभी क्रियाशील वर्ग घिर चुके हैं। भारत युवाओं का राष्ट्र है। यहाँ की 71 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है और यहीं पीढ़ी निरंतर मादक द्रव्यों के चुंगल में अंधकारमय भविष्य की ओर बढ़ रही है। अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि युवा वर्ग में नशा करने का एकमात्र मुख्य उद्देश्य “मौज मरती” करना है। जीवन के इस नये पड़ाव में लड़के—लड़कियाँ अपने में अन्तरनिहित “एडवेंचर” की नशे के रूप में अभिव्यक्त करना चाहते हैं। इसलिये विद्यार्थियों में आज नशा उत्सुकता, कौतुहल के साथ ही साथ एक “प्रतिष्ठा प्रतीक” बन गया है। अंतर्राष्ट्रीय नारकाटिक्स नियंत्रण रणनीति की रपट के अनुसार भारत में 11 मिलियन नशाखोर हैं।

अर्थ –

नशीले शब्द को कई अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है, जैसे –व्यसन, द्रव्य, नशा, मादक पदार्थ, शामक अथवा अवसादक पदार्थ। शामक अथवा अवसादक पदार्थ से तात्पर्य यह है, कि जब कोई मनुष्य अपने केन्द्रीय स्नायुमडल को क्षीण अथवा अशक्त करने के लिये या नींद अथवा शाति प्राप्त करने के लिये किसी पदार्थ का सेवन करना आवश्यक समझता हो। आधुनिक युग में मादक पदार्थों का सेवन नशे के रूप में न मानने वाले इसे आनंद प्राप्ति की परिभाषा में रखते हैं।

मादक द्रव्यों के प्रयोग से व्यक्तिगत रूप से भी समाज में बहुत सी वैधानिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। नशे के उन्मादी सेवनकर्ता सङ्क दुर्धटना एवं इन पदार्थों की प्राप्ति के लिये धोखाधड़ी, चोरी—चकारी, जाल साजी जैसे आपराधिक व्यवहार करने से भी नहीं चूकता है। युवा वर्ग में नशे के बढ़ते प्रयोग से कई सामाजिक समस्याओं में वृद्धि हो रही है।

साहित्य पुनरावलोकन

विद्यार्थियों में मादक पदार्थों के प्रयोग को लेकर अलग—अलग प्रकार से अलग—अलग स्थानों पर शोध व सर्वेक्षण होते रहे हैं जैसे—



अजरा एजाज

सहा.प्रा.गृ.वि.
राजमाता सिधिया शास. क. महा.
छिंदवाड़ा, (म.प्र.)

Periodic Research

1. कोलकोता विश्वविद्यालय के संप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग द्वारा 1988 में डा राम आहूजा ने राजस्थान में यहां की राजधानी जयपुर में वि.वि. के छात्रों में नशे के सेवन को लेकर अध्ययन किया।
2. वर्ष 1994 में निजी क्षेत्र की शैक्षणिक संस्थाओं में, पब्लिक स्कूलों, रेस्टोरेन्ट कन्टीनों पर टाफियों में नशीली दवाईयां पाई गई, अतः उन पर तुरन्त प्रतिबंध लगाया गया।
3. सन् 1994 में नशा वृत्ति की समस्या के परिप्रेक्ष्य में राजस्थान वि. वि., जयपुर ने विभिन्न महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं का अध्ययन किया एवं जयपुर में 26 जून 1995 को अंतर्राष्ट्रीय नशामुक्ति दिवस मनाया गया, इस समस्या के अध्ययन एवं निवारण के उपाय हेतु 12 सदस्यीय समिति का गठन किया गया।

उद्देश्य

हमारा समाज नशे की पकड़ में कुछ इस प्रकार आ चुका है कि यह आज हमारी राष्ट्रीय समस्या बन गया है। वर्तमान में यह प्रवृत्ति युवा विद्यार्थियों में अधिक पायी जा रही है। आज नशा सिर्फ महानगरों में ही नहीं बल्कि शाँ-शाँ: देश के सभी शिक्षण संस्थानों में पहुंचाया जा रहा है। छिन्दवाड़ा में आसपास के क्षेत्रों के विद्यार्थी भी आते हैं और छिन्दवाड़ा शहर के युवा अन्य शहरों में जाकर विद्या अर्जन करते हैं, जहां उनके संपर्क में अन्य विद्यार्थी के साथ विदेशी विद्यार्थी भी आते हैं जो अत्याधिक, स्वच्छन्द एवं बेहद उन्मुक्त होते हैं। नशा उनके लिये कुछ नई बात नहीं हाती वे इसे सहज भाव से दिनर्चार्या के रूप में लेते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में हमने इस अध्ययन के कुछ उद्देश्य निर्धारित किये हैं जो निम्नानुसार हैं—

- युवाओं को नशे की ओर आकृष्ट करने वाले कारकों को ज्ञात करना।
- परिवारिक वातावरण व मूल्यों की जानकारी प्राप्त करना।
- बदलते सामाजिक परिवेश, उपेक्षित सामाजिक व सांस्कृतिक तत्वों को जानना।

परिकल्पना

- विद्यार्थी अपने साथियों के बीच विशेष स्थान बनाने एवं फैशन के लिये नशा ग्रहण करते हैं।
- जिज्ञासा व कौतूहल वश विद्यार्थी नशा प्रारंभ करता है।
- असफलताओं से उत्पन्न तनावों को दूर करने के लिये विद्यार्थी नशा करते हैं।
- परिवारिक, सामाजिक व सांस्कृतिक उपेक्षा इस प्रवृत्ति को बढ़ाती है।
- हर स्तर का विद्यार्थी नशे का प्रयोग करता है।

अध्ययन पद्धति

नशा खोरी समाज में फैली एक गंभीर समस्या व बीमारी है। जिसके शिकार हमारे समाज में सभी आयु समूह के लोग हैं। विशेष रूप से युवा वर्ग जो विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के विद्यार्थी हैं वे इस व्याधि से सबसे अधिक ग्रसित हैं। अतः हमने छिन्दवाड़ा

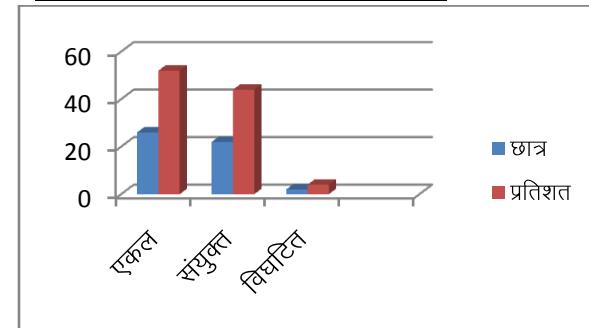
जिले में शिक्षा ग्रहण कर रहे शासकीय व अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत 50 छात्रों को अध्ययन के लिये चुना। प्रश्नावली तैयार कर विद्यार्थीयों से उत्तर जानने का प्रयास किया गया।

विश्लेषण

परिवारिक संबंध, परिवार का आकार, परिवारिक सदस्यों का व्यवहार व उनकी गतिविधियां इत्यादि बचपन से ही प्रभावित करती हैं। अतः इस संबंध में ही सर्वप्रथम जानने का प्रयास किया गया।

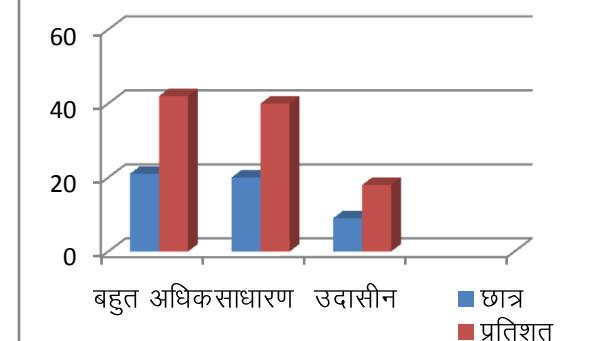
परिवार का प्रकार

क्रमांक	परिवार	छात्र	प्रतिशत
1.	एकल	26	52
2.	संयुक्त	22	44
3	विघटित	02	04
	योग	50	100



माता-पिता / अभिभावकों का बच्चों के प्रति व्यवहार

क्रमांक	माता-पिता अभिभावक ध्यान देते हैं	छात्र	प्रतिशत
1.	बहुत अधिक	21	42
2.	साधारण	20	40
3.	उदासीन	09	18
	योग	50	100



Periodic Research

माता-पिता / अभिभावकों का बच्चों के प्रति व्यवहार (स्वयं स्त्रोत)

माता-पिता / अभिभावक, बच्चों पर कितना ध्यान देते हैं अर्थात् उनका अपने बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार है? इसे जानना इसलिये आवश्यक है कि कहीं अभिभावकों की उदासीनता बच्चों में व्यसन की उत्तरदायी तो नहीं है? परिणाम आश्चर्य जनक मिले, शोध में पाया कि अधिकांश व्यसनी बच्चों के माता-पिता बच्चों पर बहुत ध्यान देते हैं, इसके विपरीत बच्चों के प्रति उदासीन रहने वाले अभिभावकों / माता-पिता के बच्चे कम व्यसनी निकलते।

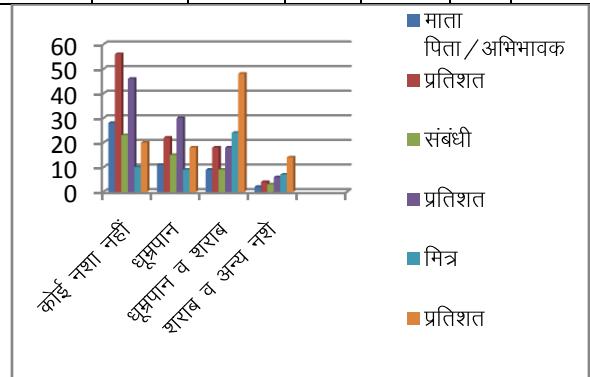
यह प्रश्न पूछने पर कि माता-पिता / अभिभावक आप पर कितना ध्यान देते हैं? तो 42 प्रतिशत छात्रों ने बताया कि बहुत अधिक ध्यान देते हैं। वहीं 40 प्रतिशत छात्रों ने बताया कि उनके परिजन साधारण या सामान्य ध्यान रखते हैं अर्थात् न कम न ज्यादा। साथ ही 18 प्रतिशत छात्रों ने बताया कि उनके माता-पिता / अभिभावक उनके प्रति उदासीन रहते हैं।

परिवार, संबंधी, मित्रों के नशाखोरी का विश्लेषण

विद्यार्थियों में नशे के सेवन का अध्ययन करने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि उनके घर परिवार या आसपास का माहौल कैसा है? साधारणतया जिनके परिवारों में व्यसन होता है या आस पास के वातावरण में, यानि पास-पड़ोस, मित्रों में नशाखोरी होती है या उनमें नशे का प्रचलन है तो वहां के विद्यार्थी नशा कर सकते हैं।

पारिवारिक सदस्यों, संबंधियों, मित्रों में नशे का विश्लेषण

नशा	माता-पिता / अभि.	प्रतिशत	संबंधी	प्रतिशत	मित्र	प्रतिशत
कोई नशा नहीं	28	56	23	46	10	20
धूम्रपान	11	22	15	30	09	18
धूम्रपान व शराब	09	18	09	18	24	48
शराब व अन्य नशे	02	04	03	06	07	14
योग	50	100	50	100	50	100



पारिवारिक सदस्यों, संबंधियों, मित्रों में नशे का विश्लेषण:- (स्वयं स्त्रोत)

किसी भी प्रकार का नशा न करने वाले परिवार 56 प्रतिशत है, अर्थात् यहाँ किसी भी प्रकार का नशा न करने वाले परिवार सबसे अधिक हैं। 22 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके माता-पिता / अभिभावक मात्र धूम्रपान ही करते हैं। 18 प्रतिशत ने बताया उनके माता-पिता / अभिभावक धूम्रपान व शराब का सेवन करने वाले हैं। वहीं 4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया उनके माता-पिता / अभिभावक शराब के साथ अन्य नशा भी करते हैं।

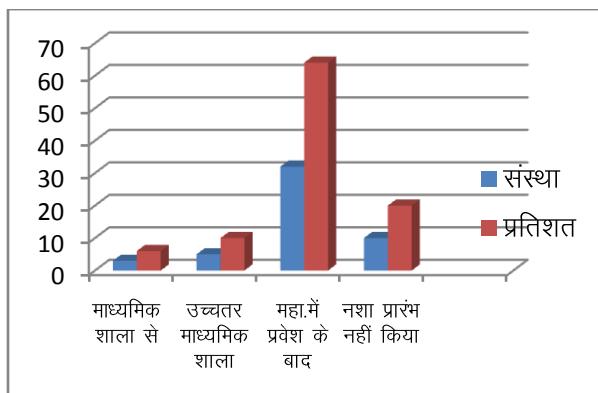
46 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके सभी संबंधी किसी प्रकार का नशा नहीं करते हैं। 30 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि उनके संबंधी मात्र धूम्रपान करते हैं। वहीं 18 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि उनके संबंधी धूम्रपान व शराब का सेवन करते हैं। मात्र 6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कहा कि उनके संबंधी शराब के अलावा अन्य प्रकार का नशा भी प्रयुक्त करते हैं।

चौकाने वाली बात यह है कि मात्र 20 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके मित्र किसी भी प्रकार का नशा नहीं करते हैं लेकिन अधिकांश मित्र धूम्रपान अथवा नशे के आदी हैं, यह समाज के लिये चेतावनी ह। विद्यार्थियों ने बताया कि उनके 18 प्रतिशत मित्र ही ऐसे हैं जो मात्र धूम्रपान करते हैं। 48 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया उनके मित्र धूम्रपान के साथ शराब का भी सेवन करते हैं। एवं 14 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके मित्र शराब व अन्य नशे का प्रयोग भी करते हैं।

नशाखोरी एवं धूम्रपान प्रारंभ करने की अवधि का विश्लेषण

क्रमांक	नशाखोरी प्रारंभ करने की अवधि	संस्था	प्रतिशत
1.	माध्यमिक शाला से	03	6
2	उच्चतर माध्यमिक शाला	05	10
3.	महा. में प्रवेश के बाद	32	64
4.	नशा प्रारंभ नहीं किया	10	20
	योग	50	100

Periodic Research



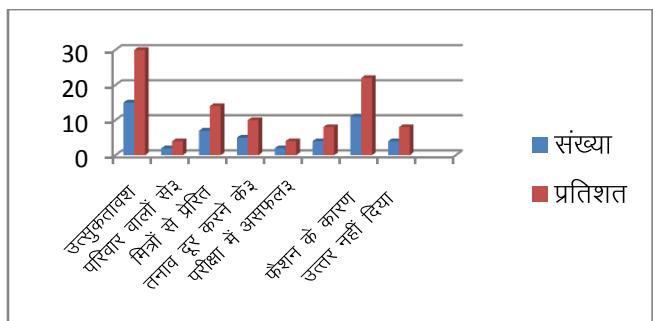
नशाखोरी एवं धूम्रपान प्रारंभ करने की अवधि का विश्लेषण (स्वयं स्त्रोत)

नशाखोरी करने वाले व्यसनी विद्यार्थियों से पूछने पर कि उन्होंने नशा कब से प्रारंभ किया? तो जो पता चला वह इस प्रकार है—माध्यमिक शाला से 6 प्रतिशत विद्यार्थियों ने, उच्चतर माध्यमिक शाला से 10 प्रतिशत विद्यार्थियों ने एवं सबसे अधिक 64 प्रतिशत विद्यार्थियों ने महाविद्यालय में प्रवेश के बाद नशे का प्रारंभ किया। मात्र 20 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे थे जिन्होंने इस लत से अपने आपको मुक्त रखा था। जैसा कि हमारी परिकल्पना थी कि हर स्तर का विद्यार्थी नशे का प्रयोग करता है, हमने उसे सही पाया। यह समाज के लिये एक घातक संकेत है।

शालेय शिक्षा के बाद महाविद्यालयीन शिक्षा में प्रवेश विद्यार्थियों के लिए एक नया अनुभव होता है। जहाँ विद्यार्थी अपने वरिष्ठ विद्यार्थियों की संगत में एवं दबाव वश व्यसन में फँस जाते हैं जो धीरे धीरे बढ़ता ही जाता है।

नशीले पदार्थों का सेवन प्रारंभ करने के उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण :—

क्रमांक	उत्तरदायी कारण	संख्या	प्रतिशत
1.	उत्सुकतावश	15	30
2.	परिवार वालों से प्रेरित	2	4
3.	मित्रों से प्रेरित	7	14
4.	तनाव दूर करने के लिये	5	10
5.	परीक्षा में असफल होने पर	2	4
6.	व्यार में धोखा खाने के कारण	4	8
7.	फैशन के कारण	11	22
8.	उत्तर नहीं दिया	04	8
	योग	50	100



नशीले पदार्थों का सेवन प्रारंभ करने के उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण (स्वयं स्त्रोत)

सर्वप्रथम विद्यार्थी ने कि किस परिस्थिति वश नशा प्रारंभ किया? उसका क्या कारण रहा? जिसके वशीभूत होकर वह व्यसनी बना। जैसा कि उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने अर्थात् 30 प्रतिशत विद्यार्थियों ने उत्सुकतावश नशा प्रारंभ किया। 4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने परिवार वालों को देखकर इस प्रवृत्ति को अपनाया। 14 प्रतिशत विद्यार्थी मित्रों से प्रेरित होकर व्यसन की ओर आकृष्ट हुए। 10 प्रतिशत विद्यार्थी तनाव से मुक्ति, 4 प्रतिशत परीक्षा में असफलता के कारण, 8 प्रतिशत व्यार में धोखा खाने के कारण, 22 प्रतिशत अपनी प्रतिष्ठा बनाने व फैशन के कारण इस लत के आदि बने 8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने उक्त प्रश्न का उत्तर देना नहीं चाहा।

क्या विद्यार्थी उत्सुकता मिटाने के लिये व्यसन का प्रयोग करते हैं?—

विद्यार्थियों द्वारा नशीले पदार्थों के उपयोग का कारण उत्सुकता मिटाना मुख्य रूप से दिखाई दिया। हमारी परिकल्पना में विद्यार्थियों में नशे का एक कारण कौतुहल एवं जिज्ञासा है। परिकल्पना की सत्यता की जाँच हेतु विद्यार्थियों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि नशा करने का एक बड़ा कारण नशीले पदार्थों के प्रति कौतुहल एवं जिज्ञासा ही है।

असफलताओं से उत्पन्न तनावों को दूर करने के लिये विद्यार्थी नशा करते हैं?—

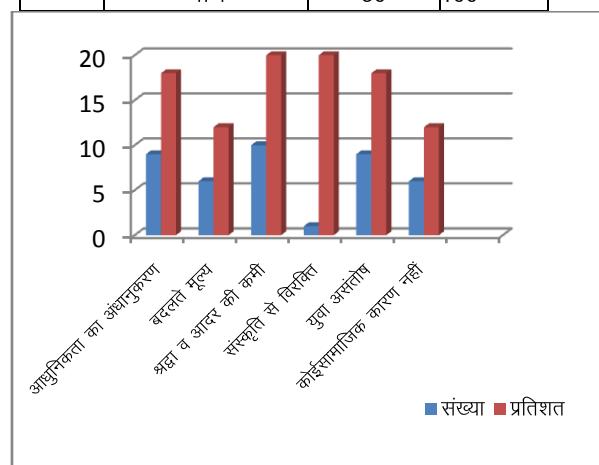
हमारी एक परिकल्पना यह भी थी कि विद्यार्थी, परीक्षा में मिली असफलता से उत्पन्न तनाव को दूर करने के लिये भी नशीले पदार्थों का सेवन करने लगते हैं। विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि ये एक बड़ा कारण नहीं है। मात्र कुछ ही छात्र तनाव से प्रभावित होकर नशे के आदि बनते हैं।

युवा वर्ग फैशन से जल्दी प्रभावित होता ही है। फैशन का सर्वाधिक एवं शीघ्र प्रभाव युवा वर्ग पर पड़ रहा है। युवा वर्ग में व्यसन भी फैशन का एक अंग बन गया है। युवा धूम्रपान, शराब एवं अन्य व्यसन को फैशन एवं आधुनिकता की निशानी मानता है। यह विश्लेषण करने पर सिद्ध भी हुआ है। शोध में हमने पाया कि 22 प्रतिशत विद्यार्थी फैशन के वशीभूत नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। जो हमारी परिकल्पना को सही सिद्ध करता है।

Periodic Research

नशाखोरों की बढ़ती हुई संख्या के सामाजिक कारण

क्रमांक	कारण	संख्या	प्रतिशत
1	आधुनिकता का अंधानुकरण	9	18
2	बदलते मूल्य	6	12
3	श्रद्धा व आदर की कमी	10	20
4	संस्कृति से विरक्ति	10	20
5	युवा असंतोष	9	18
6	कोई सामाजिक कारण नहीं	6	12
	योग	50	100



नशाखोरों की बढ़ती हुई संख्यां के सामाजिक कारण
(स्वयं स्त्रोत)

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि 18 प्रतिशत विद्यार्थी आधुनिकता का अंधानुकरण, 12 प्रतिशत बदलते सामाजिक मूल्य, 20 प्रतिशत श्रद्धा व आदर की कमी को, 20 प्रतिशत संस्कृति से विरक्ति व 18 प्रतिशत असंतोष को नशाखोरों की बढ़ती हुई संख्या का सामाजिक कारण मानते हैं, वहीं 12 प्रतिशत विद्यार्थी इस व्यसन की बढ़ती हुई संख्या का कोई सामाजिक कारण नहीं है ऐसा मानते हैं।

निष्कर्ष

विश्व के अधिकांश देशों की युवा पीढ़ी आज कुंठा और निराशा से ग्रसित है। वही हाल हमारे देश की युवा पीढ़ी का भी है। हमारे प्राचीन संस्कृति एवं पाम्परागत मूल्यों में आई गिरावट एवं भौतिकता तथा पाश्चात्य संस्कृति के अनुगामी युवाओं में नशा करना एक आवश्यक जीवन प्रक्रिया हो गई है। व्यक्ति के बौद्धिक, शारीरिक और सामाजिक विकास की प्रक्रिया उसके परिवार में जन्म लेने से ही प्रारंभ हो जाती है। बचपन से लेकर युवा अवस्था तक पारिवारिक संरक्षण में व्यक्ति रहता है। परन्तु युवा अवस्था व्यक्ति के जीवन का वह आयाम है, जिसमें वह कुछ करने की आकांक्षा रखता है, एवं अपने विचारों, मूल्यों का समाज के साथ तारतम्य न होने पर विद्रोह कर बैठता है, और कुंठा व निराशा के दौर में चुनौती का सामना करने की मानसिकता बनाने के स्थान पर मादक पदार्थों का सेवन कर भटकने लगता है।

युवा पीढ़ी जिज्ञासु स्वभाव की होती है, अर्थात् उसमें किसी भी वस्तु की जानकारी लेने की एक स्व जिज्ञासा होती है। इसी जिज्ञासु स्वभाव के कारण आज अधिकांश युवा नशीले पदार्थों की प्रकृति के प्रति अपनी उत्सुकता मिटाने के लिये ही इसका सेवन एक बार करने के बाद इनके गुलाम बन जाते हैं।

यहाँ के विद्यार्थियों में परीक्षा की असफलता नशा करने का विशेष कारण बनती नहीं दिखाई दी।

समाज में वर्तमान में बदलते मूल्यों, आधुनिकता, पाश्चात्य संस्कृति, श्रद्धा आदर की कमी एवं रुद्धियों पर ढीली पकड़ के कारण सामाजिक अव्यवस्था के फलस्वरूप वर्तमान में मध्यपान, मादक द्रव्य व्यसन की शुरुआत हुई एवं इसमें दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है।

नशे का सर्वाधिक विपरोत प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है, जिससे उसकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति इतनी अधिक बिगड़ने लगती है कि उसकी पराकाष्ठा के रूप में संबंधित व्यक्ति में अपराध वृत्ति को पनपते देखा जा सकता है। हमारे यहाँ भी आज युवा सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों से वंचित होकर भौतिकवादी जीवन, दिवास्वप्नों, असीमित आकांक्षाओं और दिशा विहीन आदर्शों के भ्रमजाल में फसता जा रहा है। शहरों की संस्कृति में तो नशा न करने वाले युवा को देहाती की संज्ञा दी जाती है। मध्यपान को आज मित्रता एवं व्यवहारिक जीवन की कड़ी समझा जाने लगा है। महाविद्यालीन छात्रों में नशा करना प्रतिष्ठा का प्रतीक समझा जाने लगा है।

नशीले पदार्थों का सेवन व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है। व्यक्ति या तो मानसिक अवसाद की स्थिति में पहुँच जाता है या फिर अत्यधिक उत्तेजित हो जाता है। शराब पीने वाले यकृत रोग, भूख की कमी, साँस का फूलना एवं प्रोटीन कैलौरी के कुपाषण के कारण जलोदर से पीड़ित हो जाते हैं।

नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्तित्व में जो परिवर्तन आता है उससे परिवार पर बहुत दबाव बनता है। ऐसे युवा बहुत चिड़चिड़े हो जाते हैं साथ ही आकामक भी, अपने नशे की आवश्यकता पूरी करने के लिए वे अपने ही घर का सामान बेचने में नहीं हिचकिचाते हैं।

नशाखोरों के कारण आज शिक्षण संस्थानों में हिंसा जैसी घटनाएँ बढ़ गई हैं।

सुझाव इस समस्या से बचाव हेतु तीन स्तरों पर हम प्रयास कर सकते हैं

- **पारिवारिक स्तर पर** – बच्चे के व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। परिवारों में स्नेह विहीन, शुष्क, बिखराव वाला वातावरण बच्चों को पथप्रस्त करता है। घर में ऐसा माहौल होना चाहिये जिससे बच्चे अपनी रुचि की सृजनात्मक गतिविधियों में सहर्ष भाग ले सकें। परिवार में ही बच्चा सहयोग, आपसी सहायता, पारस्परिक निर्भरता एवं सहिष्णुता का पाठ सीखता है। जैसे ही पता चले कि बच्चा नशा करने लगा है परिवार को सजग हो जाना चाहिए समस्या निदान का तुरंत प्रयास शुरू कर देना चाहिए

Periodic Research

- अपना व्यवहार भी उसके प्रति सहानुभूति पूर्ण रखना चाहिए।
- **शैक्षणिक संस्थान के स्तर पर** — विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्रों में असीम ऊर्जा एवं उद्यम करने की सामर्थ्य होती है। इसे यदि सही दिशा मिल जाए तो इनका व्यक्तित्व संवर जाता है। अन्यथा गलत राह पर पड़ जाता है। इस ऊर्जा को सृजनात्मक कार्यों जैसे लेखन भाषण, चित्रकला, संगीत, समाज सेवा, योग साधना, खेलकूद, जूडो—कराटे, आदि में लगाना चाहिये। सभी छात्रों का इन कार्यक्रमों में से किसी एक में भाग लेना अनिवार्य होना चाहिये।
 - **महाविद्यालय के प्राध्यापकों की यह अवधारणा नहीं होनी चाहिये** कि उनका कार्य केवल कक्षा में आए विद्यार्थियों को पढ़ाना मात्र है, बक्ति कक्षा के अंदर व बाहर घनिष्ठ संवाद स्थापित कर उन्हें उचित मार्गदर्शन देना व सुसंस्कृत करना भी है।
 - **समाज के स्तर पर** — नैतिक ह्वास ने नशावृति जैसी अनेक बुराईयों को जन्म दिया है। अतः परामर्शदाता, सामाजिक कार्यकर्ता, समुदाय नेता, बुद्धिजीवी, पुलिस के प्रतिनिधि एक साथ बैठकर सामाजिक बुराईयों पर विचार विमर्श कर, सही नेतृत्व मिलने पर “सामुदायिक कार्य दल” बनाएं। यह दल मादक व्यसनों से ग्रसित लोगों का पता लगाकर उनका उपचार करें।
 - नशाखोरी के खिलाफ जनजागृति पैदा करें।
 - नशामुक्ति शिविरों का आयोजन करें।
 - नशे से मुक्ति के बाद व्यक्तियों के पुनर्वास की व्यवस्था की जाए।
- समाज में पत्र-पत्रिकाओं, दूरदर्शन पर वृत्त चित्र एवं धारावाहिक, नुककड़ नाटकों तथा विभिन्न प्रचार माध्यमों द्वारा नशे के खिलाफ वातावरण तैयार किया जाना चाहिये।
- नशीले पदार्थों की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये।
 - युवा पीढ़ी का भारतीय संस्कृति की ओर रुझान किया जाए।
 - सभी शहरों में ड्रग डीएडिक्शन केन्द्र खोले जाने चाहिये।
 - समय समय पर शिक्षण संस्थानों में नशा मुक्ति शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिये।
 - व्यसनी युवाओं को हेय दृष्टि से न देखा जाए, उनके साथ सहयोगपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिये।
- संदर्भ—**
1. शुक्ला डा. महेश :— 21 वी. सदी की सबसे बड़ी चुनौती मादक द्रव्य, समाज कल्याण, दिल्ली फरवरी 1994.
 2. सिंह डा. एम. एस. :— “नशे का फैलता जाल”, समाज कल्याण, नईदिल्ली 1994.
 3. दीक्षित डा. डी.के.—“विद्यार्थी और मादक पदार्थ”, नईदिल्ली 2011
 4. लवानिया डा. एम.एम.पडियार, डा. गीताली — भारत में सामाजिक समस्याएं, जयपुर 2010.

5. दैनिक भास्कर, दैनिक भास्कर —धूँए में कौन उड़ता ह? भोपाल बुधवार 31 जुलाई 20
6. मयंक, राजेश : नशाखोरी की बढ़ती महामारी, समाज कल्याण, नई दिल्ली, जुलाई 1989